अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शनिवार, 11 मई 2019

किसी मिशन में सफल होने के लिए, आपके पास लक्ष्य के प्रति एकनिष्ठ समर्पण की भावना होनी चाहिए।
...डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

रेरा जैसे कानून से बेशक घर खरीदारों के हितों की कमोबेश रक्षा हो रही है, पर रियल एस्टेट की बड़ी कंपनियां अब भी अपनी ताकत के बल पर व्यवस्था की विसंगतियों का जिस तरह फायदा उठा रही हैं, वह वास्तव में बेहद चिंतनीय है।

ताकतवरों पर शिकंजा

रियल एस्टेट क्षेत्र की बड़ी कंपनियां घर खरीदने वालों से वादाखिलाफी करने के अलावा अपने मुनाफे के लिए किस तरह कानून का उल्लंघन करती हैं, इसका ज्वलंत उदाहरण आम्रपाली समूह है, जिस पर अब अपनी सभी परियोजनाओं से बाहर हो जाने का खतरा मंडरा रहा है। इस समूह पर घर खरीदने वालों की रकम दूसरी जगह लगाने का आरोप है, जिस कारण इसके निदेशक विगत अक्तूबर से ही जेल में हैं। इस समूह ने उन पैसों से बेशुमार संपत्तियां बनाईं, जबकि चालीस हजार से अधिक लोग पिछले कई साल से फ्लैट का इंतजार कर रहे हैं। यह समूह इतनी भारी आर्थिक अनियमितता कर पाया, तो इसके लिए बैंक भी जिम्मेदार थे, जिन्होंने इसे मोटे कर्ज तो दिए, पर यह जांचने की जहमत नहीं उठाई कि वह पैसा सही जगह पर लग रहा है या नहीं। यही नहीं, पिछले दिनों इस मामले की सुनवाई के दौरान सर्वोच्च न्यायालय ने यह चौंकाने वाला खुलासा किया कि कुछ शक्तिशाली लोग खुद को बचाने की कोशिश में अदालत के आदेश को बदलने का प्रयास कर रहे हैं। दरअसल अदालत ने इस समूह के आधिकारिक प्रतिनिधि को लोहा और स्टील आपूर्ति करने वालों के खातों के ब्योरे के साथ एक खास फॉरेंसिक ऑडिटर के सामने पेश होने को कहा था, पर जो आदेश सामने आया, उसमें दूसरे फॉरेंसिक ऑडिटर्स का नाम था! यानी दुस्साहसी बिचौलिये अदालत की प्रक्रिया तक को बाधित करने में गुरेज नहीं कर रहे। ऐसा ही मामला दो साल से तिहाड़ में बंद यूनिटेक के दो प्रमोटरों का है, शीर्ष अदालत ने जिन्हें जेल में दी जा रही फोन, लैपटॉप और कॉन्फ्रेंस रूम मुहैया कराने जैसी विशेष सुविधाएं वापस लेने का आदेश दिया है, क्योंकि वे जांच में सहयोग नहीं कर रहे। इन दोनों पर भी घर खरीदारों से लिए गए पैसे गलत तरीके से दूसरी जगह लगाने का आरोप है। सुप्रीम कोर्ट अब इस मामले की

सीबीआई जांच कराने के बारे में भी विचार कर रहा है। बेशक रेरा (रियल एस्टेट विनियमन और विकास अधिनियम, 2016) के आने के बाद घर खरीदारों के हितों की कमोबेश रक्षा हो रही है और कानून तोड़ने वाले बिल्डरों को खामियाजा भुगतना पड़ रहा है, पर रियल एस्टेट की बड़ी कंपनियां अब भी अपनी ताकत के बल पर व्यवस्था की विसंगतियों का जिस तरह फायदा उठा रही हैं, वह वास्तव में बेहद चिंतनीय है।

जेट के जमीन पर आने के बाद

जो लोग जेट एयरवेज के बंद होने पर दुख जता रहे हैं और याद कर रहे हैं कि वे इसकी मसाला चाय की कमी महसूस करेंगे, उन्होंने शायद ही कभी कम आकर्षक पेशों के कर्मचारियों की पीड़ा के बारे में लिखा हो।

जेट एयरवेज के अचानक बंद हो जाने से इसके कर्मचारियों, कर्जदाताओं यहां तक कि यात्रियों में भी काफी नाराजगी है। भारत की सबसे पुरानी निजी विमानन कंपनी के बंद होने का व्यापक असर इसके कर्मचारियों पर पड़ा है। अनेक लोगों ने इसकी वजह से बड़ी संख्या में नौकरियां खोने और इसके आर्थिक प्रभाव के बारे में चिंता जताई है। पच्चीस साल पहले जब विमानन उद्योग को निजी क्षेत्र के लिए खोला गया था, तबसे यह क्षेत्र काफी हद तक संगठित रहा है। वास्तव में जेट के साथ ईस्ट-वेस्ट एयरलाइन नामक विमानन कंपनी ने भी सबसे पहले उड़ान भरी थी, मगर इसके प्रबंध निदेशक की हत्या के बाद बंद होने वाली भी यह पहली कंपनी थी।

पिछले पच्चीस वर्षों के दौरान ईस्ट-वेस्ट, दमानिया, मोदीलुफ्त, एमडीएलआर, सहारा, एयर डक्कन, पैरामाउंट, पवन हंस और किंगफिशर जैसी अनेक विमानन कंपनियां शुरू होकर बंद हुईं। इनमें से कुछ या तो बिक गईं या फिर उसका किसी बड़ी विमानन कंपनी में विलय हो गया, लेकिन एक स्वतंत्र विमानन कंपनी के रूप में उनका अस्तित्व खत्म हो गया। मगर पहले कभी किसी विमानन कंपनी के बंद होने पर इतना शोर-शराबा नहीं हुआ या फिर ऐसी सहानुभूति नहीं जताई गई, जैसा जेट एयरवेज के मामले में देखा जा रहा है। वास्तव में जब किंगफिशर अपना कोराबार समेट रही थी, तब अनेक लोग मजे ले रहे थे कि इसका यह हस्र इसके रंगीन मिजाज मालिक विजय माल्या के कारण हुआ। उस समय एयरलाइंस के बंद होने से नौकरियां खत्म होने जैसे मुद्दे पर आम तौर पर कोई खास चर्चा नहीं हुई थी। बंद होने वाली दूसरी विमानन कंपनियों की तुलना में जेट के पास कहीं अधिक विमान और कर्मचारी थे, मगर कंपनी के बंद होने पर इन कर्मचारियों के भविष्य को लेकर उनके प्रति उमड़ी सहानुभूति की सिर्फ यही

नारायण कृष्णमूर्ति
वरिष्ठ पत्रकार

वजह नहीं होनी चाहिए। विमानन क्षेत्र की वृद्धि और मांग की स्थिति ऐसी है कि पायलटों और प्रशिक्षित कर्मचारियों की हमेशा उच्च मांग रहती है। इसके अलावा नागरिक उड्डयन मंत्रालय के हस्तक्षेप के कारण इसके अनेक कर्मचारियों को स्पाइसजेट और इंडिगो एयरलाइंस जैसी कंपनियों ने अपने साथ रख लिया।

जेट एयरलाइंस में नौकरियों को लेकर उपजी स्थिति से ठीक उलट आईटी (सूचना प्रौद्योगिकी) जैसे क्षेत्र में सबको एक साथ हटाया जाना बहुत सामान्य है। यहां तक कि स्किल इंडिया पहल के तहत पीएमकेवीआई (प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना) का प्रदर्शन भी अच्छा नहीं रहा, जहां या तो प्रशिक्षित लोगों को नौकरियां नहीं मिलीं या फिर ट्रेनिंग एजेंसी द्वारा उपलब्ध कराई गई नौकरियों से उन्हें जल्द ही हाथ धोना पड़ा। यदि कोई मैन्यूफैक्चरिंग हब जाकर देखे, तो वहां प्रशिक्षित फैक्टरी मजदूरों को स्थायी कर्मचारी के बजाय अनुबंध पर रखा जाना बहुत आम है। कर्मचारियों या श्रमिकों को अनुबंध या ठेके पर रखने से कंपनियों के धन की तो बचत होती ही है, पीएफ और ईएसआई जैसी बाध्यताएं भी नहीं रहतीं।

यह दुखद है कि असंगठित क्षेत्र के कर्मचारियों की तकलीफों की ओर शायद ही ध्यान जाता है या फिर उनकी नौकरियां जाने पर सार्वजनिक तौर पर उनके प्रति समर्थन जताया जाता है, जैसा कि जेट जैसी एयरलाइंस के कर्मचारियों के मामले में अभी देखा जा रहा है। जेट एयरवेज के शीर्ष 70 फीसदी कर्मचारी स्थायी नौकरी पर थे और जिन्हें अन्य लोगों की तुलना में अच्छा वेतन और अन्य सुविधाएं मिल रही थीं। अब उनके पास पीएफ, बीमा और मेडिकल बीमा के रूप में कई सुविधाएं उपलब्ध हैं, इसके विपरीत अनेक कम आकर्षक क्षेत्रों के कर्मशील कर्मचारियों को यह सब उपलब्ध नहीं होता और उन्हें बदतर वित्तीय हालात का सामना करना पड़ता है। जेट कर्मचारियों की आवाज इसलिए भी सुनी जा रही है, क्योंकि उनका अपना संगठन है। इसके विपरीत अनेक क्षेत्रों में, खासतौर से सेवा क्षेत्र में, तो व्यावहारिक रूप में कर्मचारी संगठनों का कोई अस्तित्व ही नहीं बचा है। अनेक क्षेत्र प्रबंधन और कर्मचारियों के स्तर पर अनुबंध पर नौकरियों को अनुकूल पाते हैं, क्योंकि इससे उन्हें यूनियन का दबाव नहीं झेलना पड़ता। उदाहरण के लिए, आईटी कंपनियों में या वित्तीय सेवा से जुड़े उद्योग में कोई यूनियन नहीं है। बैंकों के कर्मचारी संगठन सिर्फ सरकारी बैंकों में हैं, निजी क्षेत्र में नहीं।

अनेक संगठन श्रम कानूनों को ताक पर रखकर चल रहे हैं और यूनियन न होने से कर्मचारी अपनी आवाज भी नहीं उठा सकते। उदाहरण के लिए, निजी क्षेत्र की सिक्योरिटी एजेंसी को ही देखें, जो ठेके पर गाड्र्स उपलब्ध कराती हैं, जिन्हें बेहद खराब परिस्थितियों में मासिक छह हजार से आठ हजार के वेतन पर 12 से 14 घंटे की पाली में काम करना पड़ता है। ये गाड्र्स कम वेतन या खराब काम के घंटों को लेकर कुछ बोल नहीं सकते। यही स्थिति अनेक मैन्यूफैक्चरिंग इकाइयों की है, जहां कर्मचारियों को आठ घंटे से भी अधिक समय तक काम करना पड़ता है और इसके एवज में उन्हें शायद ही कुछ अतिरिक्त लाभ मिलता है। ऐसा लगता है कि कर्मचारियों की संगठित आवाज के अभाव में, प्रबंधन 1950 और 1960 के दशक की फिल्मों में चित्रित मालिक-दास संबंधों की याद ताजा करते हुए अपनी कंपनियों को चलाते हैं।

जो लोग अभी जेट एयरवेज के बंद होने पर दुख जता रहे हैं और याद कर रहे हैं कि वे हवाई सफर में इसकी मसाला चाय की कमी महसूस करेंगे, उन्होंने शायद ही कभी कम आकर्षक पेशों की बेहद विकट काम की परिस्थितियों और वहां काम करने वाले कर्मचारियों की पीड़ा के बारे में लिखा हो। सीवर की सफाई करने वाले कर्मचारियों पर ध्यान तभी जाता है, जब उनकी सीवर में मौत हो जाती है। कुशल और अकुशल कर्मचारियों के प्रति नजरिया बदलने का समय आ गया है, भारत को काम की परिस्थितियों के मानक तय करने चाहिए, ताकि कर्मचारियों को चाहे वे किसी भी क्षेत्र में क्यों न हों, कार्यस्थल पर किसी तरह के भेदभाव का सामना न करना पड़े।

एक कप पानी बन गया पाकिस्तान छोड़ने की वजह

अपनी कहानी

>> आसिया बीबी

वर्ष 2018 में पाकिस्तान की सर्वोच्च अदालत ने दोबारा मेरे मामले की सुनवाई की और मेरी रिहाई का फैसला सुनाया। इसके बावजूद जिस तरह से कट्टरपंथी विरोध कर रहे थे उसमें मुझे पाकिस्तान छोड़ कनाडा में बसने का फैसला करना पड़ा।

मुझे मौत की सजा सिर्फ इसलिए दी गई, क्योंकि मैंने उसी कप से पानी पिया जिससे मुस्लिम महिलाएं पानी पीती थीं। एक ईसाई महिला के हाथ से दिया हुआ पानी पीना मेरे साथ काम करने वाली महिलाओं के मुताबिक गलत था, जिस वजह से मेरे साथ एक क्रूर व सामाजिक अन्याय किया गया। मेरा जन्म पाकिस्तान प्रशासित पंजाब के शेखूपुरा जिले के इत्तन वाली गांव में हुआ। हमारा परिवार रोमन कैथोलिक धर्म को मानता है, अपने गांव में हम एकमात्र ईसाई परिवार थे। मैं और मेरा परिवार गांव में खेती-मजदूरी करते थे। मेरे साथ काम करने वालों ने अनेक बार मुझे इस्लाम धर्म अपनाने के लिए कहा।

वह एक कप पानी

वह 14 जून 2009 का दिन था, मैं उस दिन फालसा बटोरने के लिए खेत में गई थी। दोपहर तक गरमी तेज हो गई। पसीने से सराबोर मुझे बेहोशी जैसा महसूस होने लगा। मैं खेत से निकलकर पास ही एक कुएं पर पहुंची और कुएं से पानी निकाला। इसे एक कप में डालकर पीने लगी। तभी वहां एक महिला पहुंची जिसकी हालत मेरे जैसी ही हो रही थी। मैंने उसे भी कप में पानी निकालकर दिया, लेकिन तभी दूर खड़ी एक महिला ने चिल्लाकर कहा, यह पानी मत पियो, 'ये हराम है' क्योंकि इसे एक ईसाई महिला ने अशुद्ध कर दिया है। इस पर मैंने जवाब दिया, मुझे लगता है कि ईसा मसीह इस काम को पैगंबर मोहम्मद से अलग नजर से देखेंगे।

शुरू हुआ उत्पीड़न, मिली सजा

इसके बाद वहां और लोग इकट्ठा हो गए। उन्होंने मुझसे कहा, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई पैगंबर मोहम्मद के बारे में कुछ बोलने की। साथ ही धमकी दी कि, इस पाप से मुक्त होने के लिए मुझे इस्लाम स्वीकार करना होगा। मुझे यह सुनकर बहुत बुरा लगा। मैंने उनसे कहा- मैं धर्म परिवर्तन नहीं करूंगी, क्योंकि मुझे ईसाई धर्म पर भरोसा है। ईसा मसीह ने मानवता के लिए अपनी जान दी। इस पर खेतों में ही उन्होंने मुझे मारना शुरू कर दिया। मैं उनसे बचकर गांव की ओर चली आई। हफ्ते भर बाद मुझे गिरफ्तार कर अदालत ले जाया गया जहां ईशनिंदा का दोषी ठहराकर जेल भेज दिया। मुझसे मिलने के लिए पंजाब के तत्कालीन राज्यपाल सलमान तासीर आए, उन्होंने ईशनिंदा कानून की निंदा की। लेकिन इसके कुछ दिन बाद ही उनके अंगरक्षक ने उनकी हत्या कर दी।

मैंने पाकिस्तान छोड़ दिया

मेरी सजा के खिलाफ 2014 में मेरे पति ने लाहौर में याचिका दाखिल की जिसे खारिज कर दिया गया। वर्ष 2015 में पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट में अपील करने के बाद मेरी सजा पर रोक लगा दी गई। वर्ष 2018 में अदालत ने दोबारा मेरे मामले की सुनवाई की और मेरी रिहाई का फैसला सुनाया। इसके बाद पाकिस्तान में बगावत की लहर दौड़ पड़ी। मुझे और मेरे परिवार को खुलेआम धमकी दी जाने लगी। हालांकि अबतक दुनिया में मेरे बारे में चर्चा शुरू हो गई थी जिसके चलते कई देशों ने मुझे शरण देने की पेशकश की। पाकिस्तान में मौजूद एक वर्ग जिसमें कुछ सामाजिक कार्यकर्ता, विदेशी राजनयिक शामिल थे, ने मेरा सहयोग किया। इसके बावजूद जिस तरह से कट्टरपंथी विरोध कर रहे थे उसमें मुझे पाकिस्तान छोड़ कनाडा में बसने का फैसला करना पड़ा।

-आसिया बीबी के संस्मरणों व साक्षात्कारों पर आधारित

फैक्ट फाइल

माया बे बीच

>> माया बे बीच का दृश्य

वर्ष 2000 में आई फिल्म द बीच से इस द्वीप को प्रसिद्धि मिली थी।

दक्षिणी थाईलैंड के फी फी ले द्वीप पर मौजूद माया बे बीच को वर्ष 2021 तक पर्यटकों के लिए बंद कर दिया गया है। हलांकि पिछले साल इसे अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया था, जब आधिकारिक रिपोर्टों में बताया गया था कि भारी संख्या में पर्यटकों के आने से बीच व द्वीप के पर्यावरण और प्रवाल भित्तियों को बहुत नुकसान पहुंचा है, जिसके ठीक होने के लिए इस पर पर्यटकों की आवाजाही रोकने की आवश्यकता थी। वर्ष 2000 में आई फिल्म *द बीच* से इस द्वीप को प्रसिद्धि मिली थी। बंद होने से पहले यहां हर दिन 5,000 लोग आवाजाही कर रहे थे, जिससे मूंगे की चट्टानों को खासा नुकसान हुआ। 6.6 वर्ग किलोमीटर में फैला यह फी फी ले का दूसरा सबसे बड़ा द्वीप है। द्वीप में दो उथले खंड, माया बे और लोह समाह के आसपास खड़ी चूना पत्थर की पहाड़ियों का एक छल्ला है। ये द्वीप अपने रेतीले समुद्र तटों, गर्म पानी के लिए प्रसिद्ध हैं। कम ज्वार के दौरान, उथले पानी और प्रवाल के कारण माया बे बीच तक समुद्र से होकर सीधे नाव के माध्यम से नहीं पहुंचा जा सकता है। माया खाड़ी तक पहुंचने के लिए लोह समाह की चट्टानों के बीच और जंगल के एक छोटे हिस्से से गुजरना पड़ता है। माया बे को प्रकाश उत्सर्जित करने वाले समुद्री जीवों का आश्रयगृह भी माना जाता है। अक्तूबर 2015 से मई 2016 तक इस द्वीप पर लगभग 12 लाख पर्यटकों से, जिनमें 36 प्रतिशत विदेशी शामिल थे, 36.2 करोड़ थाई बहत का राजस्व प्राप्त हुआ।

जोनस भाइयों का अलग अंदाज

प्रियंका चोपड़ा के साथ निक की शादी की चर्चा थमी भी नहीं थी कि निक के बड़े भाई की शादी चर्चा में है।

न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए टैमी लै गोर्स

एक दशक पहले एक के बाद एक सुरीली धुन बनाकर पॉप म्यूजिक में चर्चित हुए जोनस ब्रदर्स ने अपनी अलग पहचान के लिए खास रिंग पहननी शुरू कर दी। तीनों भाइयों ने अपनी रिंग को शादी के ब्रांड में बदल दिया। तीनों की रिंग बेशक एक ही तरह की थी, पर उनकी शादी की रिंग में काफी फर्क रहा, यह खासकर मझले भाई जो जोनस के बारे में सच है, जिनकी शादी अभिनेत्री और *गेम ऑफ थ्रोंस* की स्टार सोफी टर्नर के साथ विगत एक मार्च को लास वेगास के अ लिटल व्हाइट वेडिंग चैपल में हुई।

जेस गेरॉन का, जिन्होंने पिछले साल लास वेगास में 600 से ज्यादा शादियां कराई थीं, कहना था कि जो जोनस की शादी में जितनी भीड़ थी, उतनी उन्होंने इससे पहले नहीं देखी। जोनस की शादी में 40 लोग थे, जो पांच से 10 लोगों के समूह में बंटे हुए थे। इस शादी समारोह का अंत भी यादगार था। 'वे बखूबी जानते थे कि मस्ती कैसे की जाती है', गेरॉन कहते हैं, 'जब हम *वीवा लास वेगास* गा रहे थे, तब मेहमानों ने

भी हमारा साथ दिया।' अचानक हुई यह सनसनीखेज शादी रॉक स्टार जो जोनस की छवि से सूट करती थी, जिन्हें *डब्ल्यू* मैगजीन ने हाल ही में जोनस ब्रदर्स का निर्विवाद नेता कहा था। पर टर्नर से उनका रोमांस छिपा हुआ नहीं था। वर्ष 2016 से ही उनके प्रशंसक इंस्टाग्राम पर दोनों की तस्वीरें पोस्ट करने लगे थे। अक्तूबर 2017 में दोनों ने इंस्टाग्राम पर अपनी सगाई की घोषणा की। अब चूंकि दोनों ने अमेरिका में शादी कर ली है, ऐसे में उनके प्रशंसक इसी गर्मी में फ्रांस में उनके शादी समारोह की उम्मीद कर रहे हैं। जो ने विगत मार्च में ही एक इंटरव्यू में फ्रांस में विवाह समारोह आयोजित करने की बात कही थी।

अगर जो जोनस दूसरी बार शादी समारोह का आयोजन करते हैं, तो वह अपने छोटे भाई के नक्शे कदम पर ही चलेंगे। विगत दिसंबर में निक जोनस ने अभिनेत्री और पूर्व विश्व सुंदरी प्रियंका चोपड़ा के साथ शादी के बाद भारत में दो शानदार समारोहों का आयोजन किया था। पहले एक दिसंबर को उन्होंने जोधपुर के उमेद भवन पैलेस में ईसाई रीति-रिवाजों के साथ शादी की। अगले दिन वहीं हिंदू रीति-रिवाजों से विवाह हुआ, जिसमें कुल 400 मेहमान आमंत्रित थे। दोनों समारोहों से पहले मेहंदी और संगीत का समारोह हुआ था। इन दोनों की शादी का रिसेप्शन नॉर्थ केरोलिना के बेलमोन्ट स्थित एक रेस्टोरेंट नेली'स सदर्न किचन में विगत जनवरी में हुआ, जिसके पीछे निक की स्वर्गीया दादी की प्रेरणा थी।

इस लिहाज से देखें, तो बड़े भाई केलविन जोनस की 2009 में डेनिली से हुई शादी अपेक्षाकृत अचर्चित रही। पर इसमें केलविन की कोई गलती नहीं। वह नहीं जानते थे कि अगले एक दशक में उनके दो भाइयों की शादी इतनी चर्चित रहेगी।

सूत्र

>> ली शाउ की

पैसे खर्च करने की कला भी है कारोबार

मैं चीन के दक्षिणी प्रांत गुओन्तोंग में पैदा हुआ था। हमारा परिवार इतना गरीब था कि हम महीने में दो बार ही मांसाहार कर सकते थे। मेरा बचपन हांगकांग में बीता। पढ़ाई के बाद अपने पैर जमाने के लिए मैंने कई छोटे-मोटे काम किए, फिर प्रॉपर्टी के कारोबार में आ गया। मैं अपने भाइयों में चौथे नंबर पर था। इसी आधार पर बाद में नई पीढ़ी ने मुझे 'अंकल फोर' कहना शुरू किया, क्योंकि अपने भाइयों में मैं अकेला था, जो गरीबी में पलकर यहां तक पहुंचा।

शुरुआत में तो मुझे प्रॉपर्टी से जुड़ी कंपनियों में सहायक का काम ही मिला, लेकिन अपनी मेहनत और दूरदर्शिता से मैंने धीरे-धीरे इस क्षेत्र में अपनी पहचान बनानी शुरू की। मैं अपना कारोबार शुरू करना चाहता था। इसी सिलसिले में मैं क्वोक तांग सेंग से मिला और सफल प्रॉपर्टी डेवलेवमेंट कंपनी सन हुंग काई का सह-संस्थापक बना। वर्ष 1976 में मैंने हैंडरसन लैंड डेवलपमेंट समूह की स्थापना की। यह समूह सिर्फ प्रॉपर्टी तक सीमित नहीं है, बल्कि होटल, रेस्टोरेंट और इंटरनेट सेवा के क्षेत्र में भी काम करता है। मुझे हांगकांग का दूसरा सबसे बड़ा अमीर आंका जाता है। लेकिन मैं धन के प्रदर्शन में नहीं, बल्कि परोपकार के लिए धन के इस्तेमाल में विश्वास करता हूं। मैंने चीन के शेयर बाजार में निवेश कर भारी पैसा कमाया, जिस कारण कभी मुझे स्टॉक गॉड कहा जाता था। पर मौजूदा दौर में मैं शेयर बाजार को बेहद जोखिम भरा मानता हूं। मैंने देश में शिक्षा के प्रसार के लिए अब तक करीब चालीस करोड़ डॉलर की मदद की है। मैं गरीब छात्रों को छात्रवृत्ति देता हूं। मैं पैसे कमाने की कला जानता हूं। वह इतनी मुश्किल कला भी नहीं है। पर मैं चाहता हूं कि पैसे को अर्थपूर्ण ढंग से खर्च किया जाए। मैं चर्चा से भी दूर भागता हूं, और एनुअल जनरल मीटिंग के अलावा कभी मीडिया के सामने नहीं आता। मुझे चुपचाप अपना काम करना पसंद है। चूंकि मेरी उम्र अधिक हो गई है, इसलिए मैं अब कामकाज की पूरी जिम्मेदारी नई पीढ़ी पर छोड़कर पूरी तरह परोपकार के काम में लगना चाहता हूं। फिलहाल मैं युवाओं के लिए 1,500 कमरे का एक हॉस्टल तैयार करवा रहा हूं। मैं लोगों की मदद करना चाहता हूं, ताकि वे दूसरों की मदद कर सकें। मुझे लोग हांगकांग का वॉरेन वफेट कहते हैं, जो मेरे लिए बड़ा सम्मान है। मैं अपने बेटों को भी कहता हूं कि कारोबार को केवल कारोबार के तौर पर नहीं लेना चाहिए।

आपमें सिर्फ पैसे कमाने की कला होना काफी नहीं है। आपको यह भी जानना चाहिए कि पैसे को कैसे अर्थपूर्ण तरीके से खर्च किया जाए।

इस हफ्ते के शब्द

डॉ. शिखा तिवारी

फोर्ब्स इंडिया ने '100 ग्रेट पीपल मैनेजर्स' की एक सूची प्रकाशित की है। इस अंक में सहारनपुर की डॉ. शिखा तिवारी को स्थान दिया गया है।

फ्लैक्सिज्म (Flexism)

कैंब्रिज डिक्शनरी में शामिल किए गए इस शब्द का अर्थ है, ऐसे कर्मचारियों से भेदभाव जिनके कार्य करने की नियत अवधि न हो।

चलन में नोट

102 अरब

नोट भारतीय रिजर्व बैंक के मुताबिक 31 मार्च 2019 तक भारतीय बाजारों में चलन में मौजूद थे।